

अपनी वासना छिपा लेंगे और इधर मैं इस देश को सुरक्षित तथा राज्य को दृढ़ कर लूँगा, इतना दृढ़ कि न तो इस राज्य में किसी की आँख में आँसू दिखाई देगा और न इसका कोई शत्रु जीवित रहेगा। युगों के लिए सुरक्षा का एक दृढ़ प्राचीर बन जायेगा।

महानन्द—तुम कितने चतुर हो, राक्षस! तुम्हारी शक्ति के भरोसे ही तो हम निश्चिन्त रहते हैं। तुम्हारी इच्छानुसार हम कल से साधु-जीवन की घोषणा कर देंगे और यत्न भी करेंगे कि भौंरे से हंस बन जायें।

राक्षस—अच्छा, तो अब आप विश्राम करें। मुझे दूसरे कक्ष में अमात्य कात्यायन से कुछ बातें करनी हैं।

महानन्द—कात्यायन को तो हमने पदच्युत कर दिया था। वह शकटार का सखा था न! उसने हमारे विरुद्ध प्रच्छन्न रूप से आग भड़काने की कौशिश की थी। हमने अपने कानों से सुना था, वह हमारी बड़ी रानी से कह रहा था 'महाराज आये दिन कंचन, कामिनी और मदिरा में राजकोष लुटाते रहते हैं। दुर्ग के अन्दर यह चर्चा फैलती जा रही है कि शीघ्र ही महाराज कश्मीर की एक सुन्दरी से और विवाह करने वाले हैं।'

राक्षस—यह विरोध तो नहीं था महाराज! यह तो हित था। कभी-कभी मनुष्य व्यर्थ ही अपने क्रोध से अपने सगे को शत्रु बना डालता है। ऐसे आपत्तिकाल में कात्यायन जैसे समझदार अमात्य को पदच्युत करना आस्तीन का साँप पालना होगा, इसीलिए तो आपका वह आज्ञा-पत्र मैंने कात्यायन को नहीं दिया। कात्यायन को अपना बनाये रखने में ही कल्याण है।

महानन्द—कात्यायन से कल्याण की आशा मुझे नहीं, वह स्वार्थी और धूर्त ऊपर से मीठा बना रहता है पर अन्दर से बड़ा काला है। उस लालची को हमारी सम्मति में कठोर दण्ड देना चाहिए।

राक्षस—जब दण्ड की आवश्यकता होगी तब दण्ड देंगे, अभी उससे प्रेम करने की आवश्यकता है। आज तो नन्द राज्य की रक्षा के लिए आवश्यक यह है कि किसी शत्रु को भी यह पता न चले कि तेरे लिए महानन्द के हृदय में शत्रुता है।

महानन्द—यदि तुम ऐसा समझते हो तो मुझे यह भी स्वीकार है। जब तुम मेरे लिए धधकती हुई ज्वाला में हाथ डाल सकते हो तो मैं वह